RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष- 14वां अंक 56 | संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर | अगस्त-अक्टूबर 2021

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

बोलते चित्र

@successpictures
MEDIA, DRAMA, NEGATIVITY, GOSSIP

रेस्टोरेंट में खाना खाते समय
सर बिल 200 हुवा
ये रखो 300
INDIA DEKHO
/IndiaDekhoOfficial
www.IndiaDekho.Co
एक गरीब से खरीदते हुए
सर 200 रूपये हुये
बहुत ज्यादा ले रहे हो ये रखो 150

आध्यात्मिक, तात्विक,
धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ
स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन,
जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग शास्त्री, जबलपुर

डिजाइन/ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
डॉ. उज्जवला शहा–पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर, श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
श्री निमित्त शाह, कनाडा

1	सूची	1
2	कविता – वात्सल्य पर्व	2
3	संपादकीय – शून्य होती संवेदनायें	3–4
4	वात्सल्य पर्व : क्या, क्यों और कैसे	5–6
5	दशलक्षण पर्व	6
6	माता–पिता के साथ व्यवहार	7
7	स्त्री प्रक्षाल क्यों नहीं करती	8–9
8	अब नहीं पालूँगा	10–11
9	शब्दों का संसार	12
10	जैन दानवीर भामाशाह	13
11	जैन धर्म की प्राचीनता/पुरी का जगन्नाथ मंदिर	14
12	गोवा और कोंकण जैन धर्म	15–16
13	लघु कथायें : समझदारी	17
14	लघु कथायें : दृढ़ श्रद्धान/हमारा असली भेष	18
15	मेरी चाह	19
16	प्यारी कवितायें	20
17	काल संवर	21–22
18	सावन माह में क्यों चढ़ाते है	22
19	कोरोना की चिंता	23–24
20	आश्चर्य किंतु सत्य	25
21	हिन्दी क्लास इन इंग्लिश....	26
22	भावपूर्ण श्रद्धांजली	27
23	प्रश्न आपके समाधान जिनवाणी के	28
24	अजगर का उद्धार	29
25	फिरोजाबाद नगर	30
26	सावधान	31
27	देखिये इन जीवों.....	32

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

सदस्यता शुल्क -500/- रू. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रू. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

वात्सल्य पर्व

दोहा

रक्षा बन्धन पर्व यह, देता शुभ संदेश ।
मुनिराजों की याद कर, हरो कर्म का वेश ।।

(मानव)

जय जय मुनिजराज हमारे, हैं जिनशासन रखवारे ।
सब जग निःस्सार बताये, निज अनुपम सौख्य जताये।।
आचार्य अकम्पन स्वामी, इस भू पर सहज विचरते ।
मुनि संग सात सौ निस्पृह, मुक्ति दर्पण को लखते ।
सब मुनिवर आत्म विहारी, चैतन्य रसामृत पीते ।
जड़ निधियाँ सारी त्यागीं, आतम निधि से ही जीते ।।
फिर नगर हस्तिनापुर में, मुनि संघ सात सौ आया ।
बलि आदि मंत्री चित में, पूरब का बैर था जागा ।।
नृप से मांगा तब नृप पद, उपसर्ग किये बहु भारी ।
कैसे उपसर्ग कहूँ मैं, जिव्हा मेरी थक जाती ।।
वह सावन मास समय था, रिमझिम वर्षा भी होती ।
शीतल बयार भी चलती, बिजली भी वहाँ कड़कती ।।
वहाँ यज्ञ रचाये बलि ने, वहाँ घास हरी भी उगा दी ।
पर मुनि नहीं घबराये, अपनी धुनि वहीं रमा दी ।।
देखो मुनि की समता को, वह समता नहीं है हममें ।
यदि हो प्रतिकूल व्यवस्था, हम घबरा जाते क्षण में ।।
ये ही सावन के दिन थे, क्यों मुनिवर याद न आते ।
था मुनिराजों पर संकट, हम लोक सम्बन्ध बढ़ाते ।।
कोई कहता सीजन आया, कोई कहता बहना आई ।
कोई बहन कहीं पर रूठी, भैया ने सुधि बिसराई ।।
आओ संकल्प करें हम, मुनिवर को याद करेंगे ।
जिनशासन रहे सुरक्षित, ऐसा शुभ भाव धरेंगे ।।

रक्षाबंधन अवसर पर इसका सामूहिक पाठन कर सकते हैं ।

रचनाकार विराग शास्त्री

शून्य होती संवेदनायें और स्वछंद होते लोग

ओम शांति, भावपूर्ण श्रद्धांजलि, विनम्र भावांजलि, वैराग्यमय प्रसंग आदि ऐसे शब्द हैं जो हर व्हाट्सएप ग्रुप में बहुतायत से लिखे या देखे जा रहे हैं। वर्तमान महामारी के काल में आयु भेद के बिना सैकड़ों लोगों को काल कवलित कर लिया है। हर दिन किसी न किसी परिचित या परिचित के सम्बधी के देह विलय के समाचार आ रहे हैं। हर दिन कहीं न कहीं शोक सभा का आयोजन हो रहा है कुछ यथार्थ संवेदनाओं को छोड़कर अधिकांश वक्तागण भी अपनी औपचारिकतायें पूरी कर रहे हैं। भाव शून्य संवेदनाओं का प्रवाह बह रहा है। ऑनलाईन होने वाली इन शोक सभाओं में शामिल कई लोग बेशर्मी से हंसते हुये दिखाई दे रहे हैं, उन्हें शोक सभा एक सामान्य आयोजन जैसी लगने लगी है। परिवार के मुख्य सदस्य का देह विलय होने पर भी एक या दो दिन के शोक प्रगट करने के बाद सब सहज लगने लगता है।

कई बार तो आश्चर्य होता है कि सोशल मीडिया पर ओम शांति जैसे भावपूर्ण शब्द को लिखने में आलस्य आता है और मृत्यु जैसी परिस्थिति में दूसरे के मेसेज फारवर्ड करके कर्तव्य की पूर्ति कर ली जाती है। परिवारीजनों के द्वारा सामाजिक परम्पराओं को दरकिनार कर 13 दिन भी प्रतीक्षा किये बिना व्यापारादि कार्य पूर्ववत चलने लगते हैं। सूतक-पातक की वर्षों पुरानी व्यवस्था / प्रथा को यह कहकर स्वछंदता का पोषण होने लगा है कि आगम में इसका उल्लेख नहीं है।

कुछ अति बुद्धिमान लोग इस प्रथा का उपहास कर इसे नहीं मानने का खुलेआम एलान कर चुके हैं। जिस पारिवारिक सदस्य के लिये शोक सभाओं में जिन संवेदनाओं का पहाड़ खड़ा किया जाता है वे पीड़ायें, संवदनायें दूसरे-तीसरे दिन ही दम तोड़तीं नजर आतीं हैं। कुछ लोग जन्म-मृत्यु के दूसरे-तीसरे दिन ही जिनमंदिरों में प्रवेश करके सामाजिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करके अपने ज्ञानवान और तर्कवान होने की दंभ भरने लगे हैं, 13 दिन या 10 दिन तक जिनवाणी को न छूने और जिनमंदिर की सामग्री को स्पर्श न करने की परम्पराओं को दकियानूसी और पुरानी पीढ़ी का और गृहीत मिथ्यात्वी सिद्ध करके परम्पराओं का विध्वंस कर रहे हैं। उनके सभी आयोजन, प्रचार-प्रसार

यथावत चलता रहता है। पर इससे भी बड़ा आश्चर्य यह है कि यही लोग परिवारिक आयोजनों, विवाह समारोहों में अनेक बेसिर पैर की परम्पराओं में रस लेते देखे जाते हैं। क्या विवाह के समय बासी पुड़ी फेंकना, घर के बाहर हल्दी से नई बहू के हाथ लगवाना, पानी में अंगूठी ढूंढना, नारियल फोड़ना, तोरण मारना आदि अनेक परम्पराओं का जिनागम में कहीं उल्लेख है? तोरण मारना हिन्दू समाज की परम्परा है जिसकी दंत कथाओं में एक राक्षस के मारने का उल्लेख है और नारियल फोड़ने में बलि के संकल्प की कथा है। पर इन सभी अविवेकपूर्ण परम्पराओं को आनंद के साथ पूरा किया जाता है। इन परम्पराओं के आनंद भोगते समय आगम प्रमाण की चर्चा बुद्धिपूर्वक गौण दी जाती है। क्या हम इन सामाजिक परम्पराओं का नष्ट कर संवेदनाहीन पीढ़ी और समाज तैयार नहीं कर रहे हैं ?

समाज को दिशा निर्देश देने वाले तथाकथित नेतृत्व और स्वयं को आगम के अध्येता कहने वाले लोग शोक सभाओं में यह कहते हुये अपनी बात को विराम देते हैं कि भगवान महावीर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे, आदिनाथ भगवान अपने श्री चरणों में स्थान दें, शोक संतप्त परिवार को ईश्वर दुःख सहने की ताकत दे, वीर प्रभु अपने पास जगह दें। **क्या इन बातों पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है कि ये बातें कहकर हम अकर्तावादी जैन शासन में कर्तृत्व का पोषण करना चाहते हैं, क्या भगवान के चरण हैं जो दिवंगत आत्मा को अपने पास स्थान दें तो फिर जीव के कर्मों को फल का क्या होगा ? भगवान तो वीतरागी और सिद्धशिला में विराजमान हैं तो क्या दिवंगत संसारी आत्मा राग के साथ वीतरागी पद का अधिकारी है? यदि ईश्वर दुःख सहने की ताकत दे सकता तो उसने दुःख दिया ही क्यों? अनेक स्थानों पर शांतिधारा से रोग शमन के नाम पर धन संग्रह किया जा रहा है, शांतिधारा के समय नाम उल्लेख करने की होड़ है। विचार कीजिये यदि इन शांतिधाराओं से ही रोग दूर होता अस्पतालों, दवाईयों, ऑक्सीजन की आवश्यकता ही क्यों होती? क्या यह तीर्थंकरों के द्वारा वर्णित उन सिद्धांतों का अवर्णवाद नहीं है जिनमें यह कहा है कि प्रत्येक जीव अपने कर्म का फल भोगता है, कोई किसी का कर्ता हर्ता नहीं है।**

सार संक्षेप यह है कि किसी भी सामाजिक परम्परा को तोड़ने के पूर्व उसके अभिप्राय को समझना होगा, कहीं हमारी अविवेकपूर्ण टिप्पणी या व्यवहार किसी बड़े दुष्परिणाम का कारण न बन जाये।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

वात्सल्य पर्व
क्या, क्यों और कैसे ?

वात्सल्य पर्व जिसे हम सब रक्षा बंधन के नाम से जानते हैं दिगम्बर मुनिराजों की प्रधानता से है। इस पर्व के पीछे अनेक कहानियाँ कहीं जातीं हैं।

1. कई साल पहले राजपूत और मुस्लिमों के बीच युद्ध चल रहा था तब चित्तौड़ के राजा की विधवा रानी कर्णावती ने गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह अपनी और प्रजा की रक्षा के लिये उन्हें राखी भेज कर बादशाह हुमायूं से सहायता मांगी थी और हुमायूं ने उनकी रक्षा कर उन्हें बहन माना था।

2. सिकंदर की पत्नी ने अपने पति के शत्रु पुरु को राखी बांधकर अपना मुंहबोला भाई बनाया और युद्ध में सिकंदर को न मारने का वचन लिया। पुरु ने भी वचन का पालन करते हुये सिकंदर को जीवन दिया। पर सिकंदर ने पुरु को बंदी बना लिया और रक्षा सूत्र को देखकर उसे वापस कर उसका राज्य वापस कर दिया।

3.गिन्नौरगढ़ क निजाम शाह गोंड के एक रिश्तेदार आलम शाह ने उन्हें धोखे से जहर देकर मार छडाला। तब निजाम की रानी कमलापति ने अपने पति की मौत का बदला लेने और अपनी रियासत को बचाने के लिये सरदार दोस्त मोहम्मद खान को राखी भेजकर मदद मांगी थी। दोस्त मोहम्मद खान ने रानी के राज्य की रक्षा की तब रानी ने भी भाई बने दोस्त मोहम्मद खान को 50 हजार की राशि और एक छोटा गांव भेंट किया था। इसी दोस्त मोहम्मद खान ने मध्यप्रदेश की वर्तमान राजधानी भोपाल का बसाया।

4.हिन्दु पुराणों के अनुसार शिशुपाल का वध करते समय कृष्ण की उंगली में चोट लगने से खून बहर रहा था। तब द्रोपदी ने साड़ी फाड़कर उसका एक टुकड़ा उंगली में बांधा जिससे खून बहना बंद हो गया। तब से कृष्ण ने द्रोपदी का अपनी बहन मान लिया।

इस तरह की और भी कहानियाँ इतिहास और हिन्दु पुराणों में मिलतीं हैं। पर जिनागम के अनुसार राजा बलि ने आचार्य अकंपन आदि 700 दिगम्बर मुनिराजों पर 7 दिन तक भयंकर उपसर्ग किया और विष्णु कुमार मुनिराज अपना मुनिपद त्याग कर बौने ब्राह्मण के वेश में मुनिराजों की रक्षा की और इस दिन साधर्मियों ने परस्पर रक्षा सूत्र बांधा तभी से यह दिन रक्षा बंधन या वात्सल्य पर्व के रूप में विख्यात हो गया।

दशलक्षण पर्व : बच्चे क्या करें ?

दिगम्बर जैन समाज का शाश्वत पर्व दशक्षण महापर्व 10 सितम्बर से प्रारंभ होने जा रहा है। इस पर्व पर बच्चे भी धर्म की आराधना कर सकते हैं। इस बार भी बच्चों के स्कूल बंद होने से उन्हें अधिक समय मिलेगा। कई स्थानों पर जिनमंदिर में कार्यक्रम होगें और ऑनलाईन अनेक कार्यक्रम होंगे।

1. प्रतिदिन जल्दी उङ्कर जिनमंदिर अवश्य जायें।
2. जिन दर्शन के बिना कुछ भी न खायें।
3. यथा संभव ऑनलाईन होने वाले प्रवचन, पूजन, कक्षायें, प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रम में शामिल होवें।
4. स्कूल की पढ़ाई और धार्मिक कार्यक्रमों के अलावा मोबाइल, टीवी का प्रयोग न करें।.
5. हरी सब्जियों और फल का त्याग करें।
6. प्रतिदिन नियमपूर्वक दो या तीन बार ही नाश्ता-भोजन लें और मौनपूर्वक भोजन करें।
7. रविवार और छुट्टी के दिन जिनमंदिर में जाकर प्रक्षाल और पूजन में शामिल हों।
8. प्रतियोगिताओं में ज्ञान वृद्धि की भावना से शामिल हों।
9. रात्रि में सोने से पहले दशलक्षण धर्म की जाप अवश्य करें।
10. 10 दिनों में घर से बनी हुई वस्तुओं का ही सेवन करें।

वात्सल्य पर्व क्या, क्यों और कैसे ?

हम क्या करें -

1. मुनिराजों पर सात दिन हुये उपसर्ग को याद सात दिन के लिये अपनी प्रिय वस्तु का त्याग करें।
2. प्रतिदिन रात्रि में मुनिराजों के स्वरूप का चिन्तन करके ही सोयें।
3. इस दिन मात्र बहिनें ही भाई को रक्षा सूत्र न बांधे बल्कि प्रत्येक साधर्मी और परिवार के सदस्यों को राखी बांधकर साधर्मी रक्षा का संकल्प करें।
4. बहनें अपने भाई को रक्षा सूत्र बांधकर स्वयं अभक्ष्य और रात्रि भोजन त्याग का नियम लें और और भाई को नियम दिलायें।
5. वात्सल्य पर्व को व्यापार न बनायें, भाई जो अपनी खुशी से दे उसे स्वीकार करें।
6. दुकानों, गाड़ी आदि वाहन में रक्षा सूत्र बांधकर गृहीत मिथ्यात्व का पाप न करें।

माता-पिता के साथ व्यवहार

1. अपने माता-पिता का सदा आदर करें।
2. उनकी सुविधा का जितना हो सके ध्यान रखें।
3. अपने माता-पिता से कभी इसकी चर्चा मत करें कि आपने उनके लिये क्या - क्या किया और कब - कब किया ।
4. उनकी बात पूरी सुनें और यदि आपको उनकी बात से सहमत न हो तो विनम्रता से उस टालने का प्रयास करें।
5. उनकी बात या आदेश को पूरा करने का प्रयास करें।
6. उनसे बात करते समय पर उस पर ध्यान दें, यहाँ-वहाँ या मोबाइल में देखते हुये बात कर उनका अविनय न करें ।
7. माता-पिता बात करते समय तेज आवाज में बात न करें।
8. किसी भी बड़े निर्णय के पहले उनकी राय अवश्य लें।
9. यदि आप अपने माता-पिता के पास न रहते हों या कहीं बाहर हों तो दिन में उनसे एक बार बात अवश्य करें।
10. माता - पिता से बात करते समय सदा आप कहकर संबोधन करें।

कोरोना महामारी के कारण विगत १ वर्ष से चेहकती चेतना का प्रकाशन नहीं हो पा रहा था । अब इसका प्रकाशन पुनः प्रारंभ हो गया हैं । सभी सदस्यों की सदस्यता अवधि १ वर्ष बढ़ाई जा रही हैं । आपको हुई बाधा के लिये हम क्षमाप्रार्थी हैं ।

संपादक

स्त्री प्रक्षाल
क्यों नहीं कर सकती ?

आज देश में अनेक जिनमंदिरों में स्त्रियों द्वारा अभिषेक की परम्परा प्रारम्भ हो गई है। कुछ मंदिरों में कई वर्षों से यह परम्परा चल रही है और तथाकथित धर्म के अधिकारियों के द्वारा खुलेआम स्त्री द्वारा अभिषेक को आगम सम्मत बताया जा रहा है और शास्त्रों में अपने मिथ्या अभिप्राय को पुष्ट करने वाले प्रमाण खोजे रहे हैं और आचार्यों के वाक्यों को अपने मन के अनुसार अर्थ करके समाज को गुमराह किया जा रहा है। स्त्री द्वारा जिनेन्द्र अभिषेक मूल संघ दिगम्बर जैन आम्नाय के विरुद्ध है।

स्त्री पर्याय में कुछ कमजोरियाँ हैं जो कि विचार करने योग्य हैं -

1. दिगम्बर जैन आम्नाय में स्त्री मुक्ति का निषेध है।
2. सम्यग्दृष्टि जीव किसी भी स्त्री पर्याय में जन्म नहीं लेता।
3. स्त्री के उत्तम संहनन नहीं होता।
4. स्त्री के छठवाँ गुणस्थान नहीं होता।
5. स्त्री 16वें स्वर्ग से ऊपर नव ग्रेवेयक में नहीं जा सकती अर्थात् अहमिन्द्र नहीं होती जबकि अभव्य भी नवमे ग्रेवेयक चला जाता है।
6. स्त्री के निशंक ध्यान नहीं होता।
7. स्त्री वस्त्र त्यागकर नग्न दिगम्बर दीक्षा धारण नहीं कर सकती।
8. स्त्री आर्यिका होने पर भी खड़े होकर आहार नहीं कर सकती।
9. स्त्री द्वादशांग की व चौदह पूर्व की ज्ञाता नहीं हो सकती।
10. स्त्री को त्रेसठशलाका के पद अर्थात् चक्रवर्ती, नारायण आदि के पद नहीं मिलते।
11. स्त्री 14 कुलकर, 24 कामदेव, 11 रुद्र, 9 नारद में किसी भी पद को धारण नहीं कर सकती।
12. स्त्री प्रतिष्ठाचार्य पद को प्राप्त नहीं कर सकती।
13. स्त्री को मुनिसंघ में कोई पट्ट नहीं मिलता और न ही उनकी कोई परम्परा मानी जाती है।

14. स्त्री कभी स्वतंत्र नहीं होती। बचपन में पिता का, युवावस्था में पति का और वृद्धावस्था में पुत्रों का संरक्षण चाहिये होता है।
15. गृहस्थ तीर्थंकरों को पुत्री कभी नहीं होती। ऋषभदेव को जो ब्राह्मी व सुन्दरी पुत्रियाँ हुईं वे हुण्डावसर्पिणी दोष से हुईं। तीर्थंकर कभी किसी को नमस्कार नहीं करते। यदि ऋषभदेव की पुत्रियों का विवाह होता तो उन्हें वर पक्ष के सामने झुकना पड़ता अतः दोनों पुत्रियों ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लिया।
16. स्त्री का विवाह होने पर उसका गोत्र बदल जाता है और संतान के परिचय में पिता का परिचय मुख्य होता है।
17. स्त्री श्मशान में नहीं जाती अर्थात् अपने स्नेही की अर्थी को कंधा नहीं दे सकती।
18. स्त्री को प्रत्येक माह अशुद्धि के दिन आते हैं।
19. स्त्री के कुछ अंगों में निरन्तर जीव राशि उत्पन्न होती रहती है।
20. स्त्री पर पुरुष को स्पर्श नहीं कर सकती अन्यथा शील का दोष लगता है। इसलिये मुनिराज की वंदना भी 7 हाथ दूर से करती है। मूलाचार की गाथा संख्या 195 के अनुसार आर्यिका होने पर अपने आचार्य से 5 हाथ की दूरी से, उपाध्याय से छह हाथ की दूरी से और मुनिराजों से 7 हाथ की दूरी से तत्वचर्चा कर सकती है फिर भगवान की प्रतिमा का अभिषेक कैसे कर सकती है। यदि कोई तर्क देता है कि स्त्री तीर्थंकर को जन्म देती है और इन्द्राणी के रूप बाल तीर्थंकर को उठाकर सौधर्म इन्द्र को देती है तो वह राग की अवस्था है। परन्तु 18 हजार शील के व्रत वाले परम ब्रह्मचर्य के धनी तीर्थंकर को स्पर्श नहीं कर सकती।
21. स्त्री या आर्यिका जब मुनिराज को भी स्पर्श नहीं कर सकतीं तो तीर्थंकर की प्रतिमा को कैसे स्पर्श कर सकतीं हैं।
22. यदि भगवान के स्पर्श करते समय स्त्री कोई अशुद्धि का प्रसंग बन जाये तो भगवान की प्रतिष्ठा ही भंग हो जाती है।
23. स्त्री के क्षायिक सम्यक्त्व और तीर्थंकर प्रकृति का बंध नहीं होता।

यह विवरण किसी स्त्री जाति की निंदा के लिये नहीं कहा गया बल्कि ये वस्तु स्वरूप है। हमें जिनागम में वर्णित यथार्थ स्वरूप को भली-भांति स्वीकार करना चाहिये।

- पण्डित रतनलालजी कटारिया

अब नहीं पालूँगा

मुक्ति दीदी! देखो तो मैं क्या लाया हूँ ?

क्या लाये हो स्वतंत्र ?

जरा बाहर तो आकर देखो, आपका मन प्रसन्न हो जायेगा।

ऐसी क्या अनोखी चीज लाये हो भाई ! रुको अभी आई

लो आ गई बाहर अब बताओ..।

ये देखो ये प्यारा सा तोता..।

तोता.... ये क्यों लाये हो और कहाँ से लाये हो स्वतंत्र ?

मुक्ति दीदी! ये कोई ऐसा-वैसा तोता नहीं है बोलने वाला तोता है। आप कहती थीं न घर में बैठी बोर हो रही हूँ। अब इससे खूब बातें करना तो आप बोर नहीं होगी।

पर ये लाये कहाँ से ?

अरे दीदी! गली के बाहर ही एक आदमी इसे बेच रहा था तो मैंने इसे खरीद लिया। अच्छा किया न..

अच्छा तो किया, पर हम इसे छोड़ देंगे...

क्या बात करती हो दीदी ? मैं तो आपके लिये लाया हूँ और इसे छोड़ने से तो रुपये बरबाद हो जायेंगे।

स्वतंत्र! ये बताओ कि रुपये अधिक जरूरी हैं या किसी की खुशी ..

बिल्कुल दीदी! खुशी जरूरी है इसलिये आपकी खुशी के लिये तो इसे लाया हूँ।

और मेरी खुशी के लिये किसी को दुःखी करना अच्छी बात है क्या ?

मैं किसी को दुःखी नहीं कर रहा बल्कि इस तोते को भी हमारे यहाँ अच्छा लगेगा..।

वो कैसे ?

अरे मुक्ति दीदी! हम इसका ख्याल रखेंगे, इसे खाने के लिये इसे अच्छी-अच्छी चीजें देंगे।इससे बातें करेंगे।

स्वतंत्र! मुझे एक बात बताओ कि यदि तुम्हें एक कमरे में बन्द कर दिया जाये और खाने के लिये

तुम्हारा मनपसंद भोजन तुम्हें मिलता रहे पर मम्मी-पापा आदि किसी से बात न करने दी जाये तो तुम कितने दिन तक कमरे में रहोगे ?

एक घंटा भी नहीं दीदी! कमरे कौन बंद रहना चाहेगा ? और पापा-मम्मी से बात किये बिना तो मैं एक दिन भी नहीं रह सकता।

तो फिर इस तोते के साथ तुम ऐसा व्यवहार कैसे कर सकते हो? इस तोते का अपना परिवार है और स्वतंत्र! कोई लाख सुविधाओं में रहे, पर बंधन किसी को भी पसंद नहीं। संसार का सबसे बड़ा दुःख पराधीनता है चाहे वह कर्म की हो, शरीर की हो या किसी व्यक्ति की। कम्पनी में सारी सुविधायें मिलने के बावजूद वहाँ काम करने वाला व्यक्ति शाम को अपने घर ही जाना चाहता है भले ही वहाँ सुविधायें बिल्कुल भी न हों क्योंकि अपने घर में उस व्यक्ति को स्वाधीनता का सुख है।

हाँ दीदी! बात तो आप ठीक कह रही है हो।

और स्वतंत्र! मुझे ये बताओ कि हम इस तोते का बहुत ख्याल रखेंगे और इसे प्यार भी करेंगे लेकिन इस पिंजरे का दरवाजा खोलेंगे तो ...

तो यह उड़ जायेगा.. (स्वतंत्र बात काटते हुये बोला)

बिल्कुल सही। इसका मतलब यह हुआ कि इसे सुविधायें नहीं स्वतंत्र रहना पसंद है।

तो दीदी! हम इसे छोड़ देते हैं।

हाँ! पर वहीं छोड़ना जहाँ ऐसे बहुत सारे तोते हों, इसे उसके साथी मिल जायेंगे।

और दीदी! मैं वादा करता हूँ कि मैं किसी भी पक्षी को नहीं पालूँगा।

शब्दों का संसार

शब्द रचे जाते हैं, शब्द गढ़े जाते हैं,
शब्द मढ़े जाते हैं, शब्द लिखे जाते हैं,
शब्द पढ़े जाते हैं, शब्द बोले जाते हैं,
शब्द तौले जाते हैं, शब्द टटोले जाते हैं, शब्द खंगाले (ढूँढे) जाते हैं।
अंततः
शब्द बनते हैं, शब्द संवरते हैं, शब्द सुधरते हैं,
शब्द निखरते हैं, शब्द हंसाते हैं, शब्द मनाते हैं,
शब्द रुलाते हैं, शब्द मुस्कराते हैं, शब्द खिलखिलाते हैं,
शब्द गुदगुदाते हैं, शब्द मुखर जाते हैं, शब्द प्रखर हो जाते हैं,
शब्द मधुर हो जाते हैं।
फिर भी
शब्द चुभते हैं, शब्द बिकते हैं, शब्द रूठते हैं,
शब्द घाव देते हैं, शब्द ताव देते हैं, शब्द लड़ते हैं,
शब्द झगड़ते हैं, शब्द बिगडते हैं, शब्द बिखरते हैं,
शब्द सिहरते हैं,
किन्तु
शब्द मरते नहीं, शब्द थकते नहीं,
शब्द रुकते नहीं, शब्द चुकते नहीं,
अतएव
शब्दों से खेले नहीं, बिना सोचे बोले नहीं,
शब्दों को मान दें, शब्दों को सम्मान दें,
शब्दों पर ध्यान दें, शब्दों को पहचान दें,
ऊँची लम्बी उड़ान दें, शब्दों को आत्मसात करें, उनसे उनकी बात करें,
शब्दों का आविष्कार करें, ध्यान से सुनें, गहन सार्थक विचार करें,
व ध्यान से समझें, फिर उत्तर दें,
क्योंकि
शब्द अनमोल हैं, जुबान से निकले बोल हैं,
शब्दों में धार होती है, शब्दों की महिमा अपार होती है,
शब्दों का विशाल भण्डार होता है
और सच तो यह है कि शब्दों का अपना एक संसार होता है।

जैन दानवीर भामाशाह

राजपूत सम्राट महाराणा प्रताप के परम सहयोगी भामाशाह का जन्म 1547 को चित्तौड़गढ़ में हुआ था। उनके पिता भारमल कावड़िया जैन थे और उन्हें राणा सांगा ने रणथम्भौर का किलेदार बनाया था। जब तक भारमल्ल रणथम्भौर के किलेदार रहे तब तक रणथम्भौर को मुगल (मुस्लिम) बादशाह नहीं जीत पाये। भारमल्ल चित्तौड़गढ़ की रक्षा करते हुये शहीद हो गये । भामाशाह के परिवार की कई पीढ़ियों ने राष्ट्र सेवा को अपना कर्तव्य माना। उनके पुत्र जीवाशाह और पौत्र अक्षयराज ने भी मेवाड़ के प्रधानमंत्री के रूप में देश सेवा की। भामाशाह के भाई ताराचंद ने सादड़ी नगर बसाया। दोनों भाई साहित्य प्रेमी थे। वे विद्वानों, कवियों और कलाकारों को खूब प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने कई पुस्तकें लिखवाईं।

भामाशाह बहुत धनवान थे लेकिन वे विशाल धन का अपने मालिक नहीं मात्र व्यवस्थापक मानते थे। इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार भामाशाह ने संकट आने पर महाराणा प्रताप को अपना इतना धन समर्पित किया जिससे 25 हजार व्यक्तियों के जीवन का 12 वर्ष तक पूरा खर्च चल सकता था। इतिहासकार रामवल्लभ सोमानी ने लिखा - यदि भामाशाह उस समय महाराणा प्रताप की मदद नहीं करते तो महाराणा प्रताप मेवाड़ छोड़कर चले जाते। यहाँ का इतिहास कुछ और ही होताा। भामाशाह की सेवाओं से मेवाड़ की रक्षा ही नहीं हुई समस्त हिन्दू जाति पर महान उपकार हुआ।

भामाशाह ने अकबर के द्वारा दिये धन-वैभव के लोभ को ठुकराकर परम देशभक्ति का परिचय दिया और सादगी और संघर्ष का जीवन जीना पसंद किया। भामाशाह दानवीरता के साथ युद्ध में भी वीरता का परिचय दिया। भामाशाह और उनके भाई ताराचंद हल्दीघाटी युद्ध में सेनापति के रूप में लड़े। वे जिस मोर्चे पर तैनात थे वहाँ से मुगल सेना को छह कोस तक भागना पड़ा। इतिहास में मेराथान के नाम के नाम प्रसिद्ध दिवेर युद्ध विजय में भामाशाह की प्रमुख भूमिका थी। त्याग और वीरता के प्रतीक भामाशाह का निधन जनवरी 1600 में उदयपुर में हुआ। भारत सरकार ने दिसम्बर 2000 में भामाशाह के सन्मान में डाक टिकट जारी किया।

ऐसे जैन समाज के गौरव और महान व्यक्तित्व भामाशाह को नमन।

- डॉ. दिलीप धींग

जैन धर्म की प्राचीनता

जैन धर्म की प्राचीनता तो स्वयं सिद्ध है। साथ ही समय - समय पर मिलने वाले ऐतिहासिक प्रमाणों से इसकी प्राचीनता सिद्ध होती रही है। मोहन जोदड़ो और हड़प्पा से मिले अनेक प्रमाण भगवान ऋषभदेव और उनके पिता नाभिराय से सम्बन्धित हैं।लगभग देश के सम्पूर्ण भागों में समय-समय पर मिलने वाली जैन तीर्थंकरों की खड्गासन ओर पद्मासन मूर्तियों से जैनधर्म की व्यापकता का ज्ञान होता है।

इसी तरह राजस्थान के बालाथल से प्राप्त एक दिगम्बर मुनिराज की पदमासन मुद्रा का कंकाल।

पुरी का जगन्नाथ मंदिर

भारत के उड़ीसा प्रान्त के पुरी नगर का जगन्नाथ मंदिर हिन्दुओं के बहुत प्रसिद्ध धार्मिक स्थान है। प्रत्येक वर्ष यहाँ जगन्नाथ भगवान का रथ की शोभायात्रा धूमधाम से निकाली जाती है। इस यात्रा में देश-विदेश के लाखों लोग शामिल होते हैं। इस मंदिर के बाहर दीवान एक जैन तीर्थंकर की मूर्ति है। संभवतः यह प्रतिमा भगवान ऋषभदेव की है जिसे बाद में कृष्ण का रूप बताया जाने लगा। यह भी संभव है कि यह प्राचीन समय में जैन मंदिर रहा हो जिसे बाद में जगन्नाथ मंदिर के रूप में जाने जाना लगा।

गोवा और कोंकण में जैनधर्म

महाराष्ट्र के कोंकण में जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था। कंदब, चालुक्य, राष्ट्रकूट, यादव और शिलाहार जैसे जैन राजवंशों ने इस क्षेत्र शासन किया। जैन ग्रंथों में इस क्षेत्र के अनेक राजाओं के नामों का उल्लेख मिलता है जो जैन धर्म के श्रावक थे। गोवा और कोंकण क्षेत्र की अनेक जातियाँ जैन धर्म को छोड़कर अन्य धर्मों को स्वीकार कर चुकीं हैं।

1. शेणवी गौड़ा / गौड़ सारस्वत ब्राह्मण - ये अकलंक देव और उनके गुरुपीठ के अनुयायी थे। इस क्षेत्र के पारंपरिक सम्पन्न और व्यापारी वर्ग के होने के कारण इन्होंने राष्ट्रकूट, शिलाहार और यादव राजवंशों के शासनकाल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सारस्वत जाति लगभग 150 वर्ष पूर्व जैन से हिन्दू बन गये।

2. सोनार / दैवज्ञ ब्राह्मण - यह कोंकण / गोवा के जौहरी और सुनार थे जो कि सोने के आभूषण के व्यापार से जुड़े हुये थे। विजय नगर काल में उडुपी के आठ मठों में स्थित वादिराज तीर्थ द्वारा इनका जैन धर्म से हिन्दू धर्म में धर्मान्तरण हुआ।

3. घुरव, कलावंत और अन्य मंदिर सेवक जातियाँ - यह जाति प्राचीन काल में जैन थीं और जैन मंदिरों में पूजा आदि के कार्यों से जुड़ी हुई थी।

4.पङ्गारे प्रभु और सूर्यवंशी क्षत्रिय - यह सूर्यवंशी क्षत्रिय जाति का सम्बन्ध तीर्थंकर ऋषभदेव के कुल से है। इसमें राणे, सुर्वे, शिर्के जैसे कुल आते हैं यह मुम्बई और उसके आसपास के क्षेत्रों के मूल निवासी भी हैं। इनको पुर्तगाली ईसाइयों ने भी जैन धर्म से ईसाई धर्म में जबरदस्ती परिवर्तन करवाया। गोवा के पुर्तगाली दस्तावेजों में इन्हें चारदोस अर्थात् चतुर्थ (महाराष्ट्र और कर्नाटक की बड़ी जैन जाति) कहा गया है। इनके वंशज खुद को रोमन कैथोलिक क्षत्रिय कहते हैं।

5. कुणबी, भंडारी, न्हावी, शिंपी सैतवाल, वेलिप, कुंभार, तेली, धोबी, मातंग, सुतार, त्वष्टा कासार और वाणी - इनको ऐतिहासिक रूप से शूद्र कहा जाता था और कुछ को चित्री। यह खुद को विश्वकर्मा मनुमय ब्राह्मण कहते हैं। भंडारी, शिंपी, कुभार, कासार बाकी महाराष्ट्र में अभी कुछ संख्या में जैन हैं।

गोवा और कोंकण के प्रमुख जैन मंदिर जिनका हिन्दू में परिवर्तन किया गया -

1. ऐसा कहा जाता है कि गोकर्ण का महाबलेश्वर मंदिर मूल रूप से भगवान ऋषभदेव का मंदिर था।
2. फोंडा के बांदोरा में स्थित महालक्ष्मी और नागेशी मंदिर एक बड़ा जैन मंदिर था जिसके मूलनायक भगवान नेमिनाथ थे। गांव में मिले कन्नड़ भाषा में लिखे शिलालेखों के अनुसार यह गांव जैनियों ने बसाया और सबसे पहले तीर्थंकर नेमिनाथ स्वामी का मंदिर बनाया। आज भी इस मंदिर के अवशेष हैं। इस मंदिर के निर्माण में शेणवी गौड लोगों का बड़ा योगदान रहा और उनके द्वारा दान के शिलालेख भी मिलते हैं।
3. नारवे में सप्तकोटेश्वर मंदिर मूल रूप से तीर्थंकर मल्लिनाथ स्वामी का मंदिर है। जैन मूर्ति के खण्डहर अभी मंदिर के आसपास मिल जाते हैं। यह गोवा के कदंब राजाओं का कुलदेवता मंदिर माना जाता था।
4. कासरपाल में कालिका मंदिर को सोनार/दैवज्ञ ब्राह्मणों और त्वष्टा कसारों द्वारा कुलदेव के रूप में पूजा जाता है। यहाँ एक जैन प्रतिमा है जिसे कुछ लोग भ्रम से बुद्ध की प्रतिमा मानते हैं।
5. केलोशी / कवले की शांतादुर्गा और कुशस्थली / मंगेशी की मंगेशी देवी मंदिर जैन मंदिर से परिवर्तित किया गया है।

6. कोंकण में स्थित शेणवी जाति ने राशि एकत्रित करके अकलंक देव की स्मृति में जिनमंदिर बनवाया। वर्तमान में यह स्थान शेणवी/जी एस बी समुदाय गौण सारस्वत ब्राह्मण द्वारा कुलदेवता के रूप में पूजा जाता है। जिसका अर्थ रवलनाथ रावलों के भगवान है। रवलनाथ एक लोकप्रिय क्षेत्रपाल / ग्राम देवता भी हैं।
7. ब्रह्मदेव कोंकण के सभी गांवों में क्षेत्रपाल / ग्राम देवता हैं जो कि जैन धर्म से सम्बन्धित हैं। इसके अलावा भी कई गांवों के जिनमंदिर हिन्दू मंदिरों में परिवर्तित किये गये हैं।

समझदारी

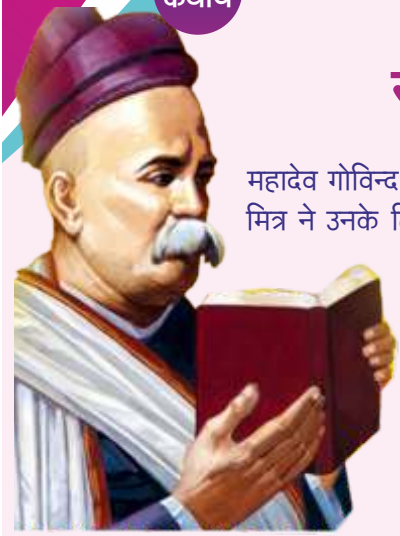

महादेव गोविन्द रानाडे प्रसिद्ध समाजसेवी नेता थे। एक बार उनके किसी मित्र ने उनके लिये अच्छे आम भेजे। उनकी पत्नी ने आम को अच्छी तरह से धोकर और संवारकर रानाडे के सामने रख दिये। एक-दो टुकड़े खाकर रानाडे ने आम की प्रशंसा की और कहा कि इस तुम भी खाकर देखो और सेवकों को भी दे दो। पत्नी ने देखा कि पति ने आम की केवल दो-तीन कली ही खाई तो उन्होंने पूछा कि आपका स्वास्थ्य तो ठीक है ?

रानाडे हंसकर बोले - तुम यही तो पूछता चाहती हो ना कि आम इतने स्वादिष्ट हैं फिर भी मैंने अधिक आम क्यों नहीं खाये? देखो ये मुझे बहुत स्वादिष्ट लगे, इसलिये मैं अधिक नहीं खाता।

यह कैसा उत्तर है कि स्वादिष्ट लगे, इसलिये अधिक नहीं लेना है। पत्नी ने आश्चर्य से कहा।

रानाडे ने फिर कहा - देखो, बचपन में जब मैं बम्बई में पढ़ता था, तब मेरे पड़ोस में एक महिला रहती थी। वह पहले सम्पन्न परिवार की सदस्या रह चुकी थी, किन्तु भाग्य पलट जाने से उसकी सारी सम्पत्ति नष्ट हो गई थी। वह बहुत कठिनाई ने अपना और अपने पुत्र की जीवन यापन करती थी। कई बार वह मुझसे कहा करती थी कि मेरी जीभ बहुत चटोरी हो गई है, इसे बहुत समझाने का प्रयास करती हूँ कि अब चार-पाँच सब्जी और मिठाई मिलने के दिन गये। अब मिठाई आदि को याद करने से कोई लाभ नहीं है। फिर भी मेरी जीभ मानती नहीं है। मेरा पेट भी नहीं भरता।

मैंने उस महिला से कई बार ये बात सुनी तभी से मैंने नियम ले लिया था कि जीभ जिस पदार्थ को पसंद करे उसे थोड़ा ही खाना। जीभ के वश में नहीं होना। यदि उस महिला के समान दुख नहीं भोगना हो तो जीभ को वश में रखना चाहिये।

प्रेरक प्रसंग

मरते न बचावे कोई

राम - रावण का युद्ध चल रहा था। इसी अवसर पर रावण ने बहुरूपिणी विद्या सिद्ध कर ली, जिससे वह अनेक रूप बनाकर लड़ता था। इसके कारण उसका एक अंग कटता तो वापस जुड़ जाता था। परन्तु जब मृत्यु का समय पास आया तो वे सभी 100 विद्यायें गायब हो गईं। अंत में कोई काम नहीं आया। कहा भी है - मणि मंत्र-तंत्र बहु होई, मरते न बचावे कोई।

दृढ़ श्रद्धान

राजा वज्रकरण ने प्रतिज्ञा ली थी कि देव-शास्त्र-गुरू के अलावा किसी को भी नमस्कार नहीं करूँगा। उन्होंने अपनी अंगूठी में मुनिसुव्रत भगवान का छोटा चित्र लगवा लिया था। महाराजा सिंहोदर के दरबार में भी उसी अंगूठी की प्रतिमा को ही नमस्कार करता था। सिंहोदर को जब मालूम चला कि वज्रकरण मुझे नहीं बल्कि अंगूठी में स्थित भगवान को नमस्कार करता है तो उसे बहुत क्रोध आया उसने वज्रकरण का राज्य छीन लिया और उसके नगर को उजाड़ दिया। किन्तु इसके बाद भी वज्रकरण ने सिंहोदर को नमस्कार नहीं किया। वनवासी राम को जब यह बात पता चली तो उन्होंने युद्ध कर सिंहोदर को बंदी बना लिया और राजा वज्रकरण को उसका राज्य वापस कर दिया।

हमारा असली भेष

पाँचों पाण्डवों को बारह वर्ष तक अपने को गुप्त रखकर रहना पड़ा। एक दिन अर्जुन ने अपने बड़े भाई युधिष्ठिर से कहा - भ्राताश्री! हम लोग इतने पराक्रमी और वीर होते हुये भी कायरों की तरह छिपकर रह रहे हैं। धिक्कार है हमारी वीरता को। हमसे तो ये भिखारी अच्छे हैं, जो निर्भय होकर तो घूम रहे हैं।

युधिष्ठिर ने कहा - राज्य का लोभ ही हमारी इस दुर्दशा का कारण है। यदि लोभ न होता तो आज हम निर्भय होकर घूम रहे होते। फिर शरीर का भेष तो हमारा भेष है नहीं। हम तो ज्ञान स्वरूपी आत्मा हैं। यदि हम अपने स्वरूप में गुप्त हो जाये तो जगत के सारे संकट मिट जायें।

मेरी चाह

मैं टीचर हूँ। एक दिन मैं अपनी कक्षा के बच्चों के Exam Paper चेक कर रही थी।मेरे पति मेरे पास ही बैठे थे, वे फोन पर गेम खेल रहे थे। अचानक मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। मुझे रोता देखकर उन्होंने पूछा - क्या हुआ? तुम रो क्यों रही हो ? मैंने बताया कि Exam में मैंने बच्चों को मेरी चाह (My Wish) विषय पर निबंध (Eassay) लिखने दिया था। मेरे पति ने गेम खेलते हुये कहा - तो इसमें रोने वाली क्या बात है? मैंने आंसू पोंछते हुये कहा - मैं तुम्हें पढ़कर सुनाती हूँ कि एक बच्चे ने क्या लिखा है ?

''मेरे पेरेंट्स अपने मोबाइल फोन से बहुत प्यार करते हैं। वे अपने मोबाइल की इतनी देखभाल (Care) करते हैं कि मेरी देखभाल करना भूल जाते हैं। जब मेरे पापा शाम को ऑफिस से थके हुये घर वापस आते हैं तो उन्हें अपनी थकान दूर करने के लिये मोबाइल याद आता है पर हमारे साथ खेलकर या बातें करना जरूरी नहीं समझते। जब मेरे पेरेंट्स कोई बहुत जरूरी कार्य कर रहे होते हैं और उस समय उनके मोबाइल की रिंग बजे तो तुरंत मोबाइल रिसीव कर सामने वाले को उत्तर देते हैं परन्तु जब मैं कोई जरूरी बात पूछता हूँ तो वे मेरे बात पर ध्यान भी नहीं देते। वे अपने मोबाइल पर व्हाट्एप पर अपने दोस्तों या रिश्तेदारों से बात करते हैं पर हमसे बात करने का उनके पास समय ही नहीं होता। जब वे फोन पर किसी से बातें कर रहे होते हैं तो वे मेरी बात कभी नहीं सुनते, चाहे मेरी बात कितनी भी जरूरी हो और यदि मैं बार-बार अपनी बात कहना चाहता हूँ तो मुझे डांट देते हैं। इसलिये मेरी चाह है कि मैं मोबाइल बनूँ। जिससे मैं अपने पेरेंट्स के साथ रह सकूँ, उनसे बात कर सकूँ।''

यह सब सुनकर मेरे पति की आंखों में भी आंसू आ गये। उन्होंने पूछा - इस बच्चे का नाम क्या है? मैंने बताया - यह हमारे ही बेटे ने लिखा है। जो मेरी ही कक्षा का स्टूडेंट है। यह सुनकर वे सुनकर वे चुप हो गये और कुछ देर तक हम दोनों ने कोई बात नहीं की, बस बार-बार एक दूसरे को देखते रहे, पर हमने एक दूसरे को देखकर एक निर्णय तो कर ही लिया था।

आप भी विचार करें - क्या मोबाइल की लत हमारे परिवार की खुशियों को कम कर रही है? क्या हम एक परिवार में रहते हुये भी एक दूसरे से दूर हो रहे हैं? वापस आइये.. अपने परिवार के लिये और संस्कारित और सुरक्षित भविष्य के लिये।

प्यारी कविताएँ

- ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन

सदा करो

मंदिर जाकर करो प्रणाम, निशदिन ध्याना आतमराम ।
जिनवाणी जब दिखे कहीं, सम्भाल के रखना तुम सही ।।
चौकी बीच में पड़ी मिले, रखे उठाकर सुख मिले ।
चिटक पे चींटी घूम रहीं हैं, अरे उठा लो मरे नहीं ।।
नीचे देख के सदा चलो, जीव बचा के पुण्य करो ।
मंदिर में न करना शोर, पाप लगे, दुख मिले अपार ।।

कभी न करना

पीड़ा अच्छी नहीं लगे तो किसी को पीड़ा न देना ।
झगड़ा अच्छा नहीं लगे तो, किसी से झगड़ा न करना ।।
निंदा खुद की सुन न सको तो निंदा कभी न करना ।
गाली अच्छी कभी न होती, तुम भी गाली न देना ।
भूखे सहन न होती हो तो, सब मिल खाना-पीना ।।
चोरी अच्छी कभी न होती, तुम भी चोरी न करना ।
झूठ बोलना बहुत बुरा है, झूठ कभी भी न कहना ।।
झूठा भोजन कर न सको, जूठा किसी को देना ।
जिनशासन की बातें मानो, सदा प्रसन्न ही रहना ।।

देव दर्शन

मेरे प्रभुवर अच्छे हैं।
मैं निश-दिन शीश झुकाता हूँ।
मेरे मुनिवर सच्चे हैं,
मैं इनकी सेवा करता हूँ।
जिनवाणी माँ ही माता है,
जो मेरे मन को भाती है,
इनकी शरण में जो भी आता।
परम सुखी वह हो जाता।।

काल संवर

राजगृही का बच्चा-बच्चा जानता था कि काल संवर यहाँ का सबसे बड़ा कसाई है। प्रतिदिन अनेक भैंसों की हत्या करना उसका व्यसन बन गया था। तभी राजगृही के सम्राट की भगवान महावीर के उपदेशों से अहिंसा के प्रति श्रद्धा बढ़ गई और उसे भाव आया कि नगर में होने वाली हिंसा बंद होना चाहिये। उन्होंने अपने सेवकों के द्वारा कालसंवर को बुलवाया और उससे कहा कि तुम भैंसों का वध करना बंद कर दो, हम तुम्हें तुम्हारे परिवार के खर्च के लिये पर्याप्त धन देंगे। काल संवर ने राजा के प्रस्ताव को मानने से मना कर दिया क्योंकि भैंसों की हत्या करना उसकी बुरी आदत बन गया था।

राजा को कालसंवर के द्वारा अपने आदेश को मानना अपमानजनक लगा । उन्होंने कालसंवर को बंदी बनाकर अंधे कुंये में डलवा दिया।

दूसरे दिन राजा भगवान महावीर के समवशरण में बैठै थे, उन्होंने वहाँ गौतम गणधर कहा - भगवन् मैंने नगर में होने वाली हिंसा को बंद करवा दिया है और सैकड़ों भैंसों का वध करने वाले काल संवर को अंधे कुंये में डलवा दिया है।

भगवान की वाणी में आया कि वह काल संवर अभी भी भैंसों को मार रहा है। यह सुनकर राजा को आश्चर्य हुआ कि ऐसा कैसे हो सकता है ? मैंने उसे गहरे कुंये डलवाया है और उस कुंये से बाहर निकलने का कोई रास्ता भी नहीं है।

भगवान की वाणी में आगे आया - वह कालसंवर अभी कुयें में ही है और भैंसों का निरन्तर वध कर रहा है।

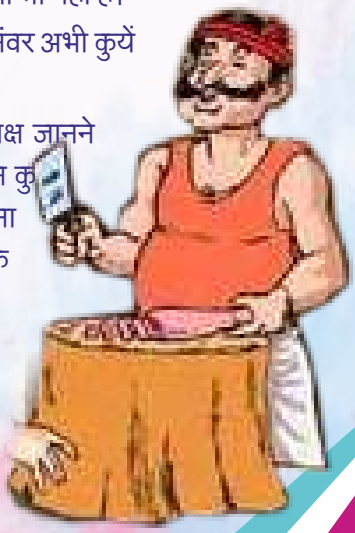

राजा ने भगवान की वाणी के अनुसार प्रत्यक्ष जानने के लिये उस कुंये के पास जाकर देखा तो कालसंवर उस कु की गीली मिट्टी को निकाल-निकालकर उससे भैंसे बना रहा था और फिर उसका वध कर रहा था। उसके आसपास सैकड़ों मिट्टी की भैंसों का ढेर लगा हुआ था।

राजा को समझ में आया कि मनुष्य के स्वभाव को दण्ड से नहीं बदला जा सकता, हिंसा को बंद करने के लिये हृदय परिवर्तन की आवश्यकता है। उन्होंने उसी समय कालसंवर को कुयें से निकलवा कर मुक्त कर दिया।

कालसंवर कुछ दिन बाद भीषण बीमारी से भयंकर पीड़ा सहन करता हुआ बहुत आकुलता के परिणाम से मर गया और घोर नरक में चला गया।

काल संवर का सबसे बड़ा पुत्र सुलसा था। पिता की मृत्यु के बाद परिवार संचालन का सारा भार उस पर ही था। परिवारजनों ने सुलसा से पिता का कार्य याद दिलाते हुये भैसों के वध का कार्य करने को कहा परन्तु सुलसा अपने पिता के विपरीत दयामय विचारों का था। भैसों की हत्या देखकर उसका मन कांप जाता था। उसने अपने परिवार को हिंसा करने से साफ मना कर दिया कि वह इस हिंसा का कार्य नहीं करेगा और उसने जीवन भर हिंसा न करने की प्रतिज्ञा ले ली।

किसी के परिणाम जबरदस्ती नहीं बदले जा सकते बल्कि रुचि बदलने से परिणाम अपने आप बदल जाते हैं।

सावन के माह में क्यों चढ़ाते हैं
शिवलिंग पर दूध

समाज में अनेक परम्परायें पुरानी पीढ़ी का अनुकरण चलतीं रहतीं हैं परन्तु इसके पीछे के रहस्य को बहुत कम लोग जानते हैं और न जानना चाहते हैं। श्रावण माह में हिन्दू समाज अपने आराध्य शंकरजी की पिण्डी पर दूध चढ़ाते हैं। आखिर इस परम्परा का रहस्य क्या है

स्वास्थ्य की दृष्टि से जो वस्तुयें किसी मौसम में स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होतीं हैं उनका त्याग किया जाता है। श्रावण माह (बरसात का मौसम) में दूध का सेवन हानिकारक होता है इसलिये पहले के लोग श्रावण माह में दूध का त्याग कर दिया करते थे और कुछ हिन्दू भक्तों ने दूध शिव पिण्डी पर चढ़ाने की परम्परा शुरु कर दी। लोगों ने देखा देखी बिना समझे इसे पूजा की विधि मान लिया। बारिश के मौसम में बीमारियों से बचने के लिये वे दूध का त्याग कर दिया करते थे। इस माह में कीड़ों की उत्पत्ति अधिक होती है और गाय - भैंस घास के साथ कई कीड़े भी खा लेतीं हैं जो दूध को हानिकारक बना देते हैं। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की डॉ. पूनम यादव के अनुसार सावन में दूध और उससे बनीं चीजें नहीं खानी चाहिये, क्योंकि इससे वात की बीमारी अधिक होतीं हैं। बारिश के मौसम में पाचन तंत्र कमजोर होने से भोजन ह्वीक से नहीं पचता और दूध नहीं पचने के कारण वात और कफ बढ़ने लगता है। आयुर्वेद के महान आचार्य वाग्भट्ट, आचार्य सुश्रुत और आचार्य चरक ने इस बात उल्लेख अपने ग्रंथों में किया है। जैन दर्शन के अनुसार जो वस्तु स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो वह अभक्ष्य की श्रेणी में आता है।

प्रासंगिक चिन्तन

तत्व चिन्तन पर भारी पड़ती
कोरोना की चिन्ता

विगत फरवरी 2020 से सम्पूर्ण विश्व कोरोना नाम की बीमारी से पीड़ित रहा है। इस बीमारी के कारण विश्व में लाखों लोगों की जान चली गई और लाखों लोग आज भी इसके दुष्प्रभाव झेल रहे हैं और अभी देश में तीसरी लहर आने की आशंका बनी हुई है।

विश्व का शायद ही कोई देश बचा हो जहाँ कोरोना से कोई मृत्यु न हुई हो और हमारे देश का शायद ही कोई ऐसा घर हो जहाँ इस बीमारी की चर्चा न हुई हो। कुछ महीने तो लोग डर में जीते रहे कि कहीं उन्हें कोरोना न हो जाये। दिन-रात कोरोना के मरीजों के आंकड़ों और उनकी समस्याओं को देखकर दिल कांपता रहा और इससे बचने के लिये दो हाथ की दूरी, मास्क का उपयोग, बार-बार सेनिटाइजर का प्रयोग, बाहर से घर आने पर कपड़े बदलना, जरुरत होने पर ही घर से बाहर निकलना, लोगों से यहाँ तक के सगे सम्बन्धियों से भी मिलना बंद जैसी अनेक सावधानियाँ रखीं जा रहीं थीं जो आवश्यक भी थीं परन्तु ऐसा लगने लगा कि मानो यदि कोरोना से बच गये तो अमर हो जायेंगे और दुनिया में मारने में वाली एक ही बीमारी है और उसका नाम कोरोना है।

एक बार हम आत्म चिन्तन करें कि इस कोरोना काल में अथवा कभी भी किसी शारीरिक बीमारी में हमें जिनवाणी के वचन कितनी बार याद आये? **लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आवे, जिसका आदि है न अंत मेरो आत्मा अनंत, जो होना सो निश्चित है केवलज्ञानी ने गाया है, मौत आनी है आयेगी इक दिन**, जैसी कई लाइनों को हमने हजारों बार गाया है और सुना है। ये लाइनें क्या हमें कमजोरी के समय याद आईं या क्या हम उनमें ही शामिल हो गये जो दिन में सैकड़ों बार कोरोना की चिन्ता में आकुलता से न जाने कितना पाप बंध करते रहे।

सच में देखा जाये ये संकट के प्रसंग हमें अपने श्रद्धा की दृढ़ता की परीक्षा के लिये होते हैं और इस परीक्षा में हम कितने पास हुये या फेल - इसका निर्णय तो हर व्यक्ति स्वयं ही कर सकता है। जैसे स्कूल में बच्चों के प्रत्येक माह यूनिट टेस्ट होते हैं। इनमें हर माह जो पाठ पूरे हो गये हैं उनसे सम्बन्धित प्रश्न होते हैं। प्रश्न यह है कि जब वर्ष में एक फाइनल परीक्षा होना ही है तो यूनिट टेस्ट क्यों ? देखा जाये तो प्रत्येक माह होने वाले ये

टेस्ट फाइनल परीक्षा के लिये ही हैं। जो छात्र इन यूनिट टेस्ट में फेल हो जायेगा तो उससे फाइनल परीक्षा में पास होने की उम्मीद कम है इसी तरह जीवन में आने वाले छोटे-छोटे संकट, बुखार आना, गिर जाना, हड्डी टूटना, अपमानित होना, यथायोग्य सन्मान न मिलना आदि यूनिट टेस्ट के समान हैं, यदि हम इन छोटे प्रसंगों में समता व धैर्य नहीं रख पाये तो मृत्यु जैसे सम्पूर्ण वियोग के संकट का सामना कैसे करेंगे ?

कोरोना से बचने के लिये वैक्सीन लगवाने की प्रेरणा दी जा रही है। वैक्सीन के केन्द्रों पर भारी भीड़ है। ऐसा लग रहा है जैसे वैक्सीन न हो, कोई अमृत का प्याला हो। वैक्सीन लगवाने के मोह में विवेक को शून्य कर दिया गया। वर्तमान में भारत में कोरोना की वैक्सीन तीन कम्पनियाँ बना रहीं हैं। सभी कम्पनियाँ ये स्पष्ट रूप से मान चुकीं हैं कि उनकी वैक्सीन में पशुओं के खून, डाल्फिन मछली के खून आदि का प्रयोग किया जा रहा है, उनकी बेवसाइट पर इसका उल्लेख किया गया है अर्थात इस वैक्सीन को बनाने में न जाने कितने जीवों की हत्या की गई होगी।

ये सब जानते हुये हम आंखों पर पट्टी बांधकर वैक्सीन लगवाने की लाइन में न केवल शामिल हैं बल्कि वैक्सीन लगवाने को जंग में जीतने का अनुभव करते हुये उसकी फोटो सोशल मीडिया पर अपलोड की जा रहीं हैं। अहिंसक जीवन शैली प्रदर्शन और दंभ के पीछे अपने प्राणों की रक्षा के लिये विवेक शून्य व्यवहार। इस पर्याय से तो विदा होना ही है, जब आयु पूरी होगी तो कोरोना क्या कोई भी बीमारी या निमित्त से विदाई तो निश्चित है तो क्यों न हम जिनसिद्धांतों के अमृत पीकर शाश्वत जीवन का उपाय करें।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

सहयोग प्राप्त - श्री नवनीत जी पांडया , अहमदाबाद के द्वारा चहकती चेतना पत्रिका के लिये 2100/- रुपये की राशि प्राप्त हुई । एतदर्थ हार्दिक आभार ।

आश्चर्य किन्तु सत्य :

एक ऐसा गांव जहां सभी जैन

दिल्ली से 120 किमी दूरी पर हरियाणा राज्य के अन्तर्गत जींद जिले में एक बड़ौदा नाम का गांव है। यहाँ के सभी निवासी जैन धर्म के अनुयायी हैं। भले इस गांव में जैन समाज के साथ जाट, मुस्लिम, ब्राह्मण, राजपूत या हरिजन या कोई भी जाति के लोग निवास करते हों पर सभी शाकाहारी हैं और जैन धर्म पर श्रद्धा रखते हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि गांव के अधिकांश लोग प्रतिदिन सामायिक भी करते हैं। इस गांव से अभी तक 44 लोगों ने दीक्षा ग्रहण की है। इस गांव में मांस, अंडे की एक भी दुकान नहीं है।

- साभार : जैन गजट

आईये आप इस प्रकार बाल संस्कार अभियान में सहभागी बनें

शिरोमणि परम संरक्षक	**1,00,000/- रु.**
परम संरक्षक	**51,000/- रु.**
संरक्षक	**31,000/- रु.**
परम सहायक	**21,000/- रु.**
सहायक	**11,000/- रु.**
सहायक सदस्य	**5,000/- रु.**
सदस्य	**1,000/- रु.**

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट अथवा चैक बनाकर प्रेषित करें अथवा आप **''चहकती चेतना''** के पंजाब नेशनल बैंक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101030106 में IFSC : PUNB0193700 जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं ।

ध्यान दें : मुमुक्षु समाज को ज्ञात है कि मुमुक्षु समाज के समस्त पंचकल्याणक आदि छोटे-बड़े आयोजनों के मुहूर्त निकालने का कार्य मैनपुरी निवासी विद्वान श्री प्रकाशचन्दजी दादा 'ज्योतिर्विद' 40 वर्षों से निस्पृह भाव से करते आ रहे हैं। बढ़ती उम्र और स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों एवं भविष्य की दृष्टि से दादा प्रकाशचंदजी ने ज्योतिष सम्बन्धी पूर्ण ज्ञान देकर श्री अनुज कुमारजी जैन को अच्छी तरह से प्रशिक्षित कर दिया है। श्री प्रकाशदादा के स्वास्थ्य को देखते हुये अब सभी मुमुक्षु भाई प्रतिष्ठा आदि आयोजनों के मुहूर्त हेतु श्री अनुजकुमारजी से निःशुल्क परामर्श ले सकते हैं।

सम्पर्क - **श्री अनुजकुमारजी जैन,** अलीगंज जिला - एटा उ.प्र. मोबा. 9837713598

सम्पर्क समय - सायं 8 बजे से 10 बजे तक।

हिन्दी क्लास इन इंग्लिश

मैं अचंभित कम सदमें ज्यादा हूँ, जबसे मैंने अपने छः वर्षीय पोते के साथ पहली कक्षा की ऑनलाइन क्लास अटैंड की है। मेरे लिये यह अजूबा अनुभव था। क्लास माइक्रोसॉपट मीट पर आयोजित होनी थी। निर्धारित समय पर लेपटॉप स्क्रीन पर अवतरित हेाते हुये मैम बोली - 'गुडमॉर्निंग चिल्ड्रेन्स, आई एम सिन्दूरा आचार्य, योर हिन्दी क्लास टीचर।' बच्चों ने अपने-अपने ऑडियो अनम्यूट करते हुये एक साथ 'गुडमार्निंग टीचर' का राग अलापा।

सिन्दूरा मैम खुश होते हुये बोलीं - 'प्लीज म्यूट योर डिवाइसेस, आई विल फर्स्ट टेक योर अटेंडेस एंड देन शो ए स्लाईड ऑफ नेटीकेट्स। सो प्लीज वॉच केयरफुली।'

'ओके चिल्ड्रन्स, टुडे वी विल लर्न हाऊ तो टू राइट स्माल अ एंड बि आ' - सिन्दूरा मैम बोलीं - बच्चो 'मैं आपकी हिंदी टीचर हूँ तो कभी-कभी हिंदी में भी बात करूँगी।'

ओके मैम - कुछ बच्चे माइक अनम्यूट करके बोले।

'थैंक्स गॉड, हिंदी की कक्षा में हिंदी तो सुनने मिली', मैं मन ही मन बुदबुदाया।

'आई एम शेयरिंग माई स्क्रीन, यू केन सी हिंदी लेटर स्माल अ हेयर' - सिन्दूरा मैम ने स्क्रीन शेयर की जिसमें अ के साथ अनार का चित्र बना था। उन्होंने आगे कहा - 'अनघा अनम्यूट योर सेल्फ और बताओ अ से कौन सा फल होता है?'

'पॉमग्रेनेट मैम' - अनघा की आवाज सुनाई दी।

'वेरी गुड अनघा, नाऊ कीर्तिप्रिया यू टेल द नेम इन हिंदी।'

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। कीर्तिप्रिया कोई जबाब नहीं दे सकी। इसके बाद सिन्दूरा मैम बोलीं - 'नाऊ इट्स ओपन फार ऑल, केन एनीबडी टेल।' मैंने अपने पोते की ओर देखते हुये धीरे से कहा - अनार। वह मेरी ओर इस तरह देखने लगा जैसे मैंने उसकी बेइज्जती कर दी हो। अंततः सिन्दूरा मैम ही बोलीं - 'चिल्ड्रेन्स लिसन केयरफुली, पॉमीग्रेनेट इज कॉल्ड अनार इन हिंदी, रिमेम्बर स्मॉल अ फॉर अनार,प्लीज रिपीट विथ मी।' बच्चों ने तीन बार सिन्दूरा मैम के साथ स्माल अ फॉर अनर का उच्चारण किया। 'नाऊ वी विल लर्न टू राइट बिग आ, फर्स्ट यू राइट स्माल अ एंड देन ड्रा ए स्टेण्डिंग लाइन ऑपटर इट लाइक दिस' - सिन्दूरा मैम ने राइटिंग बोर्ड पर लिखते हुये कहा - 'हेव यू डन।' मेरा पोता बड़ा आ, नहीं नहीं सॉरी...बिग आ लिखने में व्यस्त था। मैंने अपने बेटे को आवाज दी - 'तुम्हीं इसके साथ बैठकर पढ़ाई कराओ, मुझे नहीं लगता कि मैं पहली कक्षा में भी पढ़ने के योग्य हूँ।' अगली क्लास शुरु होने के पहले मेरा पहले जैसा उत्साह गायब हो गया था।

- अरुण अर्णव खरे

भावपूर्ण श्रध्दांजली

श्री विमलकुमारजी जैन, दिल्ली

श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली के मैनेजिंग ट्रस्टी और मुमुक्षु समाज के आधार स्तंभों में से एक श्री विमलकुमारजी जैन का 13 अप्रेल 2021 को स्वर्गवास हो गया। श्री विमलकुमारजी मुमुक्षु समाज के द्वारा निर्मित होने वाले जिनमंदिरों के निर्माण के मुख्य सहयोगी थे और अधिकांश मंदिरों में उन्होंने मूलनायक प्रतिमा विराजमान कर अपूर्व धर्म भावना के साथ परिणामों की विशुद्धि की।

श्रीमति स्नेहलताजी जैन, कानपुर

चहकती चेतना के परम संरक्षक श्री जैनबहादुर जैन, कानपुर की धर्मपत्नी श्रीमति स्नेहलताजी का विगत 15 अप्रेल को स्वर्गवास हो गया। श्रीमति स्नेहलताजी पूरे जीवन अपने लौकिक दायित्वों के निर्वहन के साथ देव-शास्त्र-गुरू के प्रति समर्पित रहीं। आध्यात्मिक शिविरों में सहभागिता करना और सभी धर्मस्थानों में शक्ति पूर्वक दान देना उनके पवित्र परिणामों का परिचायक है। जीवन के अंतिम समय में भी शुद्धात्मा के स्मरण करतीं रहीं और अत्यंत शांत परिणामों से आगामी यात्रा के लिये प्रस्थान कर गईं। इस अवसर पर परिवार की ओर से चहकती चेतना को 500/- रु. प्रदान किये गये।

श्रीमति शारदाबेन शांतिलालजी शाह

मुमुक्षु समाज के श्रेष्ठी श्री नेमिषभाई एवं श्री केतनभाई की माताजी और श्री अनंतराय ए. सेठ की बहन श्रीमति शारदा बेन शांतिलाल शाह, मुम्बई का अत्यंत शांत परिणामों से देह विलय हो गया। आपने सम्पूर्ण जीवन वीतरागी तत्वज्ञान का लाभ लिया और पूज्य गुरूदेवश्री कानजी स्वामी श्री कानजी स्वामी के द्वारा उद्घाटित तत्वज्ञान के प्रति आपकी अपूर्व दृढ़ आस्था थी। आपका पूरा परिवार जिनधर्म की प्रभावना में तन-मन-धन से समर्पित है।

इसके साथ ही प्रसिद्ध आत्मार्थी विद्वान पण्डित श्री चेतनभाई मेहता राजकोट, पण्डित ऋषभजी जैन इंदौर, पण्डित पीयूष शास्त्री प्रबंध संपादक - जैन पथ प्रदर्शक, जयपुर, पण्डित नेमीचन्दजी जैन ग्वालियर, श्री सुरेश पाटनी कोलकाता, ब्र. सुरेखा बेन केशवलाली शाह जलगांव, श्रीमति रजनी कमलेश गिड़िया खैरागढ़, श्रीमति शांतिदेवी जैन नागपुर, श्री वी.के. जैन दिल्ली, श्री अतुल जैन विश्वास नगर दिल्ली, श्रीमति रानू विवेक जैन पिड़ावा, आदि अनेक साधर्मियों का भी वियोग हुआ। चहकती चेतना परिवार सभी दिवंगत आत्माओं के शिवगति की कामना करता है।

प्रश्न आपके समाधान जिनवाणी के

1. शंका - आचार्यों के नाम के साथ 108 क्यों लगाया जाता है ?
समाधान - क्रोधादि कषायों के समरंभ, समारंभ आदि पाप के 108 द्वारों को बंद करके 108 गुणों को प्रगट करते हैं, इसलिये उनके नाम के आगे 108 लगाते हैं। इसलिये माला में भी 108 दाने होते हैं।

- राजेश कुमार जैन, पटेरा

2. शंका - जब रात्रि में पूजन करना मना है तो विवाह समारोह में रात्रि में पूजन क्यों की जाती है ?
समाधान - विवाह कार्य दिन में ही करना चाहिये। रात्रि में विवाह पूजन विधि करना धर्म विरुद्ध कार्य है।

- प्रमोद कुमार जैन, पनागर

3. शंका - वीतरागी मंदिर में कीमती वस्तुओं की क्या आवश्यकता है ?
समाधान - आजकल जिनमंदिरों में भक्ति की जगह आडम्बर मुख्य होने लगा है। प्राचीन मंदिरों में छत्र भामण्डल आदि पत्थर के ही होते थे। जिनमंदिरों में कीमती समान रखना चोरों को निमंत्रण देना है।

- नीरज कुमार जैन, पन्ना

4. शंका - क्या फल को काटने से वह अचित्त जीव रहित हो जाता है ?
समाधान - फल को काटकर नमक आदि मिलाने से अचित्त हो जाता है।

- मिली जैन, कटनी

5. शंका - जहाँ दिगम्बर मंदिर न हो तो क्या वहाँ श्वेताम्बर प्रतिमा या चंदन लगी प्रतिमा के दर्शन कर सकते हैं या नहीं ?
समाधान - निर्ग्रन्थ और निर्लेप प्रतिमा ही वंदनीय है, परिग्रह सहित प्रतिमा वंदनीय नहीं है।

- आभा जैन, पाली

6. शंका - ऋषभनाथ तो प्रथम तीर्थंकर थे तो उन्होंने सर्वप्रथम किसे वंदन किया था ?
समाधान - ऋषभनाथ ने सर्वप्रथम सिद्ध भगवान को नमस्कार किया था।

- मणिलाल जैन, भरतपुर

7. शंका - क्या क्षुल्लक, आर्यिका के चरण स्थापित किये जा सकते हैं ?
समाधान - नहीं। यह आगम सम्मत नहीं है।

- मीरा जैन, अजमेर

8. शंका - क्या किसी मंदिर की छाया मकान पर अशुभ माना जाता है ?
समाधान - किसी जिनागम में इसका उल्लेख नहीं है, यह मन से बनाई हुई बातें हैं।

- एम.एल.जैन, किशनगंज

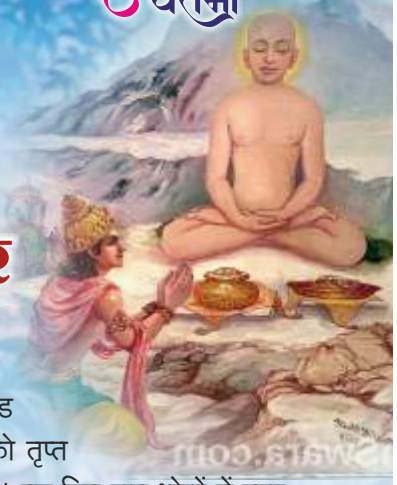

अजगर का उद्धार

एक दड नाम का विद्याधरों का स्वामी था। वह बड़ा प्रतापी था। उसका एक मणिमाली नाम का पुत्र था। राजा दंड ने मणिमाली को युवराज नियुक्त किया, वह पंचेन्द्रियों को तृप्त करने के लिये विषयों के सेवन में अत्यन्त आसक्त हो गया। वह दिन-रात भोगों में लगा रहता था। राजा दण्ड को भोगों के भोगने से महापाप का बंध हुआ और वह नरक चला गया। पाप परिणामों से मृत्यु होने उसने अजगर की पर्याय प्राप्त की। वह विशाल अजगर राजा के खजाने में ही रहता था। उसे पूर्व जन्म की स्मृति हो गई इसलिये वह खजाने में मात्र मणिमाली को ही जाने देता था। मणिमाली के अलावा यदि कोई दूसरा व्यक्ति वहाँ जाता था तो वह अजगर उसे डराकर भगा देता था।

एक दिन उस नगर में दिगम्बर मुनिराज आये तो धर्म चित्त वाले मणिमाली ने उस अजगर के बारे में पूछा तो उन अवधिज्ञानी मुनिराज ने बताया कि उसके खजाने में रहने वाला अजगर उसका पिता राजा दंड ही हैं। बुद्धिमान मणिमाली ने खजाने में जाकर उस अजगर को संबोधित करते हुये कहा - हे पिता! तुमने धन-वैभव में अत्यंत ममत्व परिणाम धारण किये तथा भोगों में तीव्र आसक्ति के कारण इस दुर्गति में अजगर की पर्याय मिली है।

हे पिताश्री! इस विषय आसक्ति का त्याग करो। यह विषय सुख जीवन में अपार कष्ट देता है। जिसका फल आप भोग रहे हैं। आप स्वयं विचार करें - कहाँ वह विद्याधरों के स्वामी का ऐश्वर्यपूर्ण जीवन और कहाँ यह दुःखमय अजगर की पर्याय।

राजा मणिमाली के मार्मिक शब्दों से उस अजगर के मन में अद्भुत परिवर्तन उत्पन्न हुआ और उसे पूर्व की किसी पर्याय में सुना हुये जिनवचन याद आ गये। उस विशाल अजगर ने व्रत लेकर आहार का परित्याग कर दिया और शरीर के प्रति ममत्व का त्याग कर दिया।

कुछ समय के बाद उस व्रती अजगर का शांत भाव सहित मरण हो गया और वह स्वर्ग में महान ऋद्धिधारक देव हुआ। जिनवचन परम औषधि है और सभी दुःखों के दूर करने में समर्थ हैं।

फिरोजाबाद नगर
पहले की तरह चंद्रपुर होगा...!

उत्तरप्रदेश का फिरोजाबाद नगर चूड़ियों के लिये देश भर में विख्यात है। फिरोजाबाद की नगर पंचायत ने फिरोजाबाद का नाम चंद्रपुर करने का प्रस्ताव उत्तरप्रदेश शासन को भेजा है। फिरोजाबाद के जैन मंदिर में भगवान चन्द्रप्रभ की विश्व की सबसे बड़ी स्फटिक मणि की प्रतिमा है। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार फिरोजाबाद का प्राचीन नाम चंद्रवार है। उस समय चंदवार के राजा चन्द्रसेन का राज्य था जो कि हिन्दू धर्म के अनुयायी थे। इसी राजा के समय भगवान चन्द्रप्रभ की विशाल स्फटिक मणि की प्रतिमा प्राप्त हुई थी। चन्द्रप्रभ भगवान की प्रतिमा मिलने और राजा का नाम चन्द्रसेन होने के कारण इस नगर का नाम चंद्रवार पड़ा। आज भी चंदरवान नगर जो कि यमुना नदी के किनारे बसा है। यहाँ राजा चन्द्रसेन के किले के खंडहर रूप में और प्राचीन जैन मंदिर के अवशेष मौजूद हैं। सन् 1194 में चौहान वंश के राजा चन्द्रसेन और मुहम्मद गौरी के बीच युद्ध हुआ। जिसमें चन्द्रसेन राजा हार गया। सन् 1566 में राजा टोडरमल गया से तीर्थ यात्रा करके इस नगर से होकर लौट रहे थे,तब उन्हें लुटेरों ने लूट लिया। राजा टोडरमल के अनुरोध पर बादशाह अकबर ने फिरोज शाह को यहाँ भेजा। तब इस नगर के प्रबंधक फिरोज शाह के द्वारा इस नगर का फिरोजाबाद कर दिया गया।

सावधान !

कहीं ये अनदेखी का शिकार आप न हो जायें

ऑनलाइन गेम की लत ने लिये 13 साल के बच्चे के प्राण

सॉरी माँ ! आप रोना मत

कोरोना काल में मोबाइल के बढ़ते प्रयोग ने सुविधा के साथ समस्यायें भी पैदा कीं हैं। स्कूल बंद होने से स्कूलों की ऑनलाईन कक्षाओं के लिये हर बच्चे के पास मोबाइल होना जरूरी हो गया है। माता-पिता को न चाहते हुये भी मोबाइल बच्चों को देना पड़ रहा है और हर समय उन पर नजर रखना सबके लिये संभव नहीं होता। ऐसे ही एक दुःखद घटना ने सबको सोचने पर मजबूर कर दिया है। मध्यप्रदेश के छतरपुर के सिविल लाईन क्षेत्र में रहने वाले 13 साल के कृष्णा पांडे को लॉकडाउन के दौरान ऑनलाईन फ्री फायर गेम खेलने की लत लग गई।छठवीं कक्षा में पढ़ने वाला कृष्णा अपनी माँ के मोबाइल से गेम खेलता था। गेम खेलते हुये वह कई बार रुपये हार चुका था। उसकी माँ अस्पताल में नर्स और पिताजी पैथालॉजी का संचालन करते थे। काम के कारण वे कृष्णा को समय नहीं दे पाते थे। 30 जुलाई को माँ प्रीति को जब बैंक खाते से 1500 रु. डेबिट होने का मैसेज मिला तो उन्होंने अपने बेटे को फोन लगाकर पूछा तो उसने बताया कि ये रुपये ऑनलाईन गेम के कारण कट गये हैं तो उन्होंने कृष्णा को इसके लिये डांटा। इसके बाद डिप्रेशन में कृष्णा ने कमरे में जाकर फांसी लगा ली। उसने अपने सुसाइट नोट में लिखा कि मैं मोबाइल के ऑनलाईन गेम मे अब तक 40000/- रुपये हार चुका है। आई एम सॉरी। डोंट क्राइ।

इसके पहले भी जनवरी में सागर जिले में एक 12 साल के बच्चे को जब उसके पिता ने ऑनलाईन गेम खेलने से मना किया तो उसने नाराज होकर फांसी लगा ली। इसी साल तिरुवनंतपुरम में एक 19 वर्ष के युवा छात्र ने ऑनलाईन गेम की लत के कारण आत्महत्या कर ली थी। यह छहर दिन 20 घंटे मोबाइल गेम खेलता था।

इन घटनाओं को देखते हुये मध्यप्रदेश की सरकार ने गेम कम्पनी के विरुद्ध पुलिस केस बनाया है और ऐसे गेम बनाने वाली कंपनियों पर कार्यवाही के लिये योजना बनाने का निर्णय किया है। **प्रश्न यह है कि हम क्या करें -**

1. जितना संभव हो बच्चों पर नजर रखें।
2. बच्चों की आवश्यकता पूरी होने के बाद उनसे मोबाइल वापस लें।
3. ऑन लाईन पेमेन्ट के एप पर डेबिट कार्ड के नम्बर सेव मोड पर न रखें।
4. बच्चों को पर्याप्त समय दें। आप जिनके भविष्य के लिये धन कमाते हैं उनके वर्तमान में समय अवश्य दें।
5. बच्चों में माता-पिता से डर का नहीं बल्कि सम्मान और मित्र का सम्बन्ध बनायें।
6. सभी ऑनलाईन गेम के एप को मोबाइल से हटाकर रखें।
7. ''थोड़ा अनुशासन-थोड़ा प्यार सुखी रहे परिवार'' की नीति अपनायें।

देखिये इन जीवों के साथ कितना क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया जा रहा है, ये जीव न जाने किन परिणामों का फल भोग रहे हैं...

इन जीवों को देखकर यही भावना भाईये-

सुखी रहें सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे,
बैर पाप अभिमान छोड़ जग नित्य नये मंगल गावे ।

बोलते चित्र

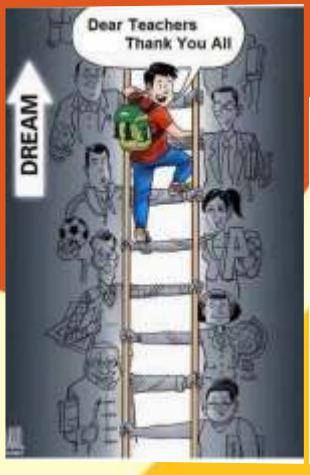
Dear Teachers
Thank You All
DREAM

SUCCESS
STEP 1
STEP 2
STEP 3
STEP 4

1
2
3

समयसारमय वर्ष हमारा जीवन का ये क्षण है न्यारा

समयसार : कहान शताब्दी समारोह के अंतर्गत प्रकाशित

समयसार विज्ञान वाटिका

★ ग्रन्थराज श्री समयसारजी पर आधारित प्रश्न पुस्तिका
★ समयसारजी के स्वाध्याय का मंगल अवसर
और साथ में ढ़ेरों आकर्षक पुरुस्कार भी

पुस्तक प्राप्ति हेतु सम्पर्क :
श्री अमित जैन
डी.टी.डी.सी. दिल्ली - 9811393356

पुस्तक प्राप्ति के लिये दिये गये नम्बर पर फोन न करें, मात्र अपना नाम, पूरा पता पिन कोड सहित व्हाट्सएप करें और पायें घर बैठे **समयसार विज्ञान वाटिका** यह प्रश्न वाटिका हमारे द्वारा व्हाट्सएप पर भी भेजी जा सकती है। मूल कॉपी अथवा फोटो कॉपी भी मान्य है।
व्हाट्सएप पर मंगाने के लिये सम्पर्क करें - **8442074031**

निवेदक - समयसार कहान शताब्दी समारोह समिति

विद्वानों और साधर्मियों के लिये अनुपम योजना

जिनदेशना के अंतर्गत

श्री उम्मेदमल छात्रवृत्ति योजना

जिनागम के किसी भी महत्वपूर्ण विषय पर पी.एच.डी अथवा शोध करने वाले छात्रों को प्रत्येक वर्ष छात्रवृत्ति

मातुश्री तेजप्रभा आगम साधक सन्मान

जिनागम सम्बन्धित नवीन साहित्य के लेखन के लिये युवा विद्वान के प्रोत्साहन के लिये सन्मान स्वरूप 25000/- की राशि प्रदान की जायेगी।

श्री उम्मेदमल जिनधर्म प्रभावक सन्मान

जिनशासन के प्रचार-प्रसार में निरन्तर संलग्न विद्वान को उनके योगदान के लिये सन्मान स्वरूप 31000/- की राशि प्रदान की जायेगी।

इसके अतिरिक्त **विद्वान गौरव योजना** और **साधर्मी संबल योजना** के तहत उनकी आकस्मिक परिस्थिति में आर्थिक सहयोग प्रदान किया जायेगा।

निवेदक - कमल बड़जात्या एवं साकेत बड़जात्या, दादर मुम्बई

समन्वयक - ज्ञायक शास्त्री, मोरबी

सम्पर्क : संयोजक - विराग शास्त्री, जबलपुर 9300642434 jindeshna@gmail.com